Date ____________)

सं-2

अभ्यास कार्य - 2

कक्षा - XII

हिंदी

16 अप्रैल - 15 मई

काव्य - हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

गद्य - 1. सुमिरिनि के मनके - 'गुलेरी'

2. संवदिया - फणीश्वर नाथ रेणु

3 { अपठित गद्यांश
अपठित पद्यांश

यह दीप अकेला

1. प्रश्न - कवि अज्ञेय ने दीपक क्या विशेषताएँ बतलाई हैं?

2. प्रश्न - कवि समाज के विषय में क्या सोचता है?

3. प्रश्न - कवि ने 'मैंने देखा एक बूँद' कविता में किस सत्य के दर्शन किए?

4. प्रश्न काव्य - सौंदर्य स्पष्ट करें—

क 'यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुत: इसको भी शक्ति दे दो'

ख सूने विराट के सम्मुख
हर आलोक छुआ अपनापन
है उन्मोचन
नश्वरता के दाग से!

5. प्रश्न - भाव स्पष्ट करें—

यह समिधा-ऐसी आग हठीला बिरला सुलगाएगा
यह अद्वितीय - यह मेरा - यह मैं स्वयं विसर्जित
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
यह गर्व भरा मदमाता - - ।

गद्य –

1. सुमिरिनी के मनके

1. बालक बच गया पाठ के आधार पर आधुनिक शिक्षा पर किए गए व्यंग्य को स्पष्ट करें।

2. 'घड़ी के पुर्जे' पाठ के माध्यम से लेखक धर्म के क्षेत्र में व्याप्त किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया गया है?

3. 'ढेले चुन लो' प्रसंग में समाज में व्याप्त किस कुरीति पर व्यंग्य किया है?

4. 'वर' के चयन के विषय में स्त्रियों की भारतीय समाज में क्या स्थिति है?

संवदिया

1. संवदिया कहानी में लेखक ने किस घटना की तुलना द्रौपदी चीर हरण से की है और क्यों?

2. हरगोबिन की बड़ी बहुरिया के प्रति भावनाओं का वर्णन कीजिए।

3. अपने गाँव वापस पहुँचने पर हरगोबिन की स्थिति विक्षिप्तों जैसी क्यों हो गई थी?

अपठित गद्यांश –

अगले पृष्ठ पर देखें –

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–** 15

एक दो गोते लगाने के बाद अगर मोती हासिल नहीं होता तो लोग सागर के सिर सारा दोष मढ़ने लगते हैं, जबकि दोष उनकी अपनी गोताखोरी में ही होता है। छोटे और अहम् सभी कार्यों को सदा पूरा मन लगाकर कीजिए। इंसान हर किस्म की चुनौतियों और परीक्षाओं से लड़ने में अक्षम नहीं है। कमी होती है इरादे को पाने के दृढ़ निश्चय की। इंसान मन में कुछ भी करने की ठान ले, वह कर सकता है। ईश्वर समस्त वस्तु-जीव जगत का सम्पूर्ण योग है और उसका प्रतिरूप इंसान के भीतर है। इंसान ईश्वर की तरह कुछ भी कर सकता है यदि वह अपनी अक्षय प्रकृति के साथ एकाकार होना सीख ले। एकाग्रता से बड़ा इंसान का कोई मित्र नहीं है।

एक किसान ने कुआँ खोदना शुरू किया। दस हाथ खोदने पर पानी नहीं निकला, तो वह निराश हो गया। दूसरी जगह खोदने लगा। फिर दूसरी जगह भी दस हाथ खोदने पर पानी नहीं निकला, तो तीसरी जगह खुदाई शुरू कर दी। इस प्रकार पाँच-सात स्थानों पर उसने खोदा लेकिन कहीं पानी नहीं निकला। वह बेहद दुःखी हुआ और निराश मन से घर लौट आया। अगले दिन उसने अपनी कहानी धर्मगुरु को सुनाई। धर्मगुरु उसे समझाते हुए बोले, "तुमने पाँच स्थानों पर दस-दस हाथ खोदकर पचास हाथ भूमि खोदी। यदि तुम अलग-अलग न खोदकर एक ही स्थान पर इतना खोदते, तो तुम्हें पानी अवश्य मिल जाता। वास्तव में तुमने धैर्य नहीं रखा और थोड़ा-थोड़ा खोद कर निर्णय बदल लिया। अब तुम एकाग्रता से एक ही स्थान पर खोदो और जब तक पानी न निकले, तब तक खोदना जारी रखो। तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।"

राजा विक्रमादित्य के पास सामुद्रिक लक्षण जानने वाला एक ज्योतिषी आया। उनके सामुद्रिक लक्षणों को देखकर ज्योतिषी गहरी सोच में डूब गया। वास्तव में सामुद्रिक लक्षणों के आधार पर उन्हें दुर्बल, दीन-हीन और कंगाल होना चाहिए, लेकिन वे स्वस्थ सम्राट हैं। ज्योतिषी की बौखलाहट भाँपकर राजा विक्रमादित्य बोले, 'बाहरी लक्षणों से अगर आप संतुष्ट नहीं तो जरा ठहरिए .... छाती चीर कर दिखाता हूँ, भीतर के लक्षण'। ज्योतिषी शीघ्रता से बोला, "नहीं-नहीं मैं समझ गया।" आप निर्भय हैं, पुरुषार्थी, एकाग्र हैं इसलिए समस्त परिस्थितियाँ आपके अनुरूप हो गई हैं।'

सच है कि युग इंसान को नहीं बनाता, बल्कि इंसान युग को बनाता है। एकाग्रता में हाथ की लकीरें बदलने की क्षमता है, जो सच्चा सम्राट तक बना सकती है।

(क) **सफलता प्राप्त करने के लिए किन-किन गुणों की आवश्यकता होती है और क्यों ?** 2

(ख) **अक्षय प्रकृति के साथ एकाकार होना व्यक्ति के लिए लाभकारी क्यों है ?** 2

(ग) **किसान को अपने लक्ष्य में सफलता क्यों नहीं मिली ?** 2

(घ) **धर्मगुरु ने किसान को क्या गुरुमंत्र दिया ?** 2

(ङ) **मानव किस आधार पर विषम परिस्थितियों को अपने अनुरूप कर सकता है ? राजा विक्रमादित्य के दृष्टांत द्वारा स्पष्ट कीजिए।** 2

(च) (*i*) **सरल वाक्य बनाइए–** 1

एकाग्रता में हाथ की लकीरें बदलने का दमखम है, जो सच्चा सम्राट बना सकती है।

(*ii*) **विपरीतार्थक शब्द लिखिए–** 1

अक्षम, निर्भय।

(*iii*) **उपसर्ग छाँटकर दो नए शब्द बनाइए–** 1

प्रकृति।

(*iv*) **भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–** 1

एकाग्र, गुरु।

(छ) **परिच्छेद का शीर्षक लिखिए।** 1

अपठित पद्यांश

कु० पू०उ०

Date

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए —

उस दिन इन आँखों से वे पैर
भूल नहीं पाऊँगा फटी बिवाइयाँ
खूब गई दूधिया निगाहों में
धंस गई कुसुम-कोमल मन में

(क) कवि किसके खुरदरे पैरों की बात कर रहा है?

(ख) रिक्शा वाले के पैरों में बिवाइयों और गाँठों से भरे घट्ठे क्यों पड़ गए थे ?

(ग) कवि ने मन और दृष्टि के लिए किन उपमानों का प्रयोग किया है ?

(घ) 'घंटों के हिसाब से ढोए जा रहे थे' से कवि किस कटु सत्य की ओर संकेत करता है?

(ङ) कवि को क्यों लगता है कि वह रिक्शा चालक के बिवाई पड़े पैरों को भूल नहीं पाएगा?

वह जो सड़क पर खून बह रहा है
इसे सूँघकर तो देखो
और पहचानने की कोशिश करो
यह हिंदू का है या मुसलमान का
किसी सिक्ख का या ईसाई का
किसी बहिन का या भाई का
सड़क पर इधर-उधर पड़े
पत्थरों के बीच में दबे
'टिफ़िन कैरियर' में
जो रोटी की गंध आ रही है
वह किस जाति की है?
क्या तुम मुझे यह सब बता सकते हो ?
इन रक्त सने कपड़ों, फटे जूतों, टूटी साइकिलों
किताबों और खिलौनों की क़ौम क्या है?

क्या तुम मुझे बता सकते हो ?
स्कूल से कभी न लौटने वाली
बच्ची की प्रतीक्षा में खड़ी
माँ के आँसुओं का धर्म क्या है ?
और अस्पताल में दाखिल
जख्मियों की चीखों का मर्म क्या है?
ये रक्त सने कपड़े
उस आदमी के हैं
जिसके हाथ
मिलों में कपड़ा बुनते हैं
कारखानों में जूते बनाते हैं
खेतों में बीज डालते हैं
पुस्तकें लिखते, खिलौने बनाते हैं
और शहर की
अँधेरी सड़कों के लैंप-पोस्ट जलाते हैं

(क) खून को पहचाना क्यों नहीं जा सकता है?

(ख) प्रतीक्षा में खड़ी माँ के आँसुओं का क्या कारण है?

(ग) टिफिन में रखी रोटी, फटे जूते आदि का संबंध समाज के किस वर्ग से है?

(घ) सांप्रदायिक हिंसा के शिकार कौन लोग होते हैं?

(ङ) कविता में श्रमिकों और कृषकों के प्रति लेखक की सहानुभूति के औचित्य को स्पष्ट कीजिए।